



करते हैं, पर वे मेंढक ही रहते हैं। इसी तरह, प्रत्येक जीवित जीव अपनी आनुवंशिक विशेषताओं के अनुसार विकसित होता है।

भले ही हम नए जीवों के उद्भव में आनुवंशिक उत्परिवर्तन और आनुवंशिक लक्षणों पर उनके प्रभाव के विषय को स्वीकार करें, यह सृष्टिकर्ता की क्षमता और इच्छा का खंडन नहीं करता है। परन्तु, नास्तिक लोग कहते हैं कि यह बिना किसी इरादे के ही अंजाम पा जाता है। जबकि हम देखते हैं कि सिद्धांत इस बात की पुष्टि करता है कि विकास के ये चरण केवल एक जानकार विशेषज्ञ के इरादे और माप के साथ ही हो सकते हैं और आगे बढ़ सकते हैं। इस प्रकार, निर्देशित विकास, या ईश्वरीय विकास की अवधारणा को अपनाना संभव है, जो जैविक विकास की बात करता है और यादृच्छिकता को अस्वीकार करता है। और विकास के पीछे एक बुद्धिमान, सक्षम और वैज्ञानिक का होना जरूरी है, जिसका अर्थ है कि हम विकास को स्वीकार कर सकते हैं, लेकिन डार्विनवाद को पूरी तरह से अस्वीकार करते हैं। महान जीवाश्म विज्ञानी और जीवविज्ञानी स्टीफन जोल कहते हैं : "या तो मेरे आधे साथी बहुत मूर्ख हैं या डार्विनवाद धर्म के साथ चलने वाली धारणाओं से भरा है।"

📞 0203 2300 00 000 2026 10:11:03

📞 0203 2300 00 000 2026 10:11:03

📞 0203 2300 00 000 2026 10:11:03

📞 0203 2300 00 000 2026 10:11:03